“ Special Auxiliary Force (SAF) - एक अनोखा प्रयोग ”

2005 में बिहार सरकार जब अपराधियों को काबू में करने के लिए कृत संकल्पित हूई तब श्री अभयानन्द जी , माननीय पुलिस महानिदेशक, जो उस समय अपर पुलिस महानिदेशक (मुख्यालय) थे, ने नक्सलवादियों और आपराधिक गुटो के खिलाफ मानव शक्ति की कमी महसूस की | उन्होने सरकार के समक्ष सेवानिवृत सैनिकों को बिहार पुलिस में भर्ती करने का सुझाव रखा | चुकि सेवानिवृत सैनिको को प्रशिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं थी और वे पहले दिन से ही सेवा देने को तैयार थे | बिहार सरकार को यह सुझाव बहूत पसंद आया और इस प्रस्ताव को कैबिनेट की मंजूरी भी मिल गयी एवं अविलंब ही बिहार पुलिस ने 5000 सेवानिवृत सैनिको को भर्ती कर लिया | इसे “ SAF(Special Auxiliary Force)- विशेष सहायक बल ” का नाम दिया गया | सेवानिवृत सैनिको को बिहार पुलिस मे भर्ती करना काफी कारगर साबित हूआ और ये बहूत सारे राज्यो के लिए रोल मॉडल साबित हूआ | ओड़ीशा, मध्य प्रदेश, और झारखंड ने इस धारणा का अनुकरण किया और अपने यहाँ भी सेवानिवृत सैनिको को पुलिस बल मे शामिल करना शुरू कर दिया|

When there was a political will in the state of Bihar in 2005 to curb the menace created by unlawful elements, Abhayanand DGP Bihar, (who was the ADG Headquarters then) saw that there was manpower shortage in Bihar Police force to carry out effective operations against Naxalites and criminal gangs. He then came up with the idea of recruiting retired army men. Given that the ex-army men are already trained in arms and combats there was no ramp up time needed for them. They are ready to contribute from day one. The state government quickly gave a buy in for this idea and shortly 5000 ex-army men were recruited by the Bihar state police force. This concept soon became a role model and other states such as Odisha, Madhya Pradesh and Jharkhand started recruiting ex-army men.